ISSN 2454-8596
www.vidhyayanaejournal.org

An International Multidisciplinary Research E-Journal

हिंदी नाटक मे भारतेन्दु काल

डॉ. हिरपरा मधुभाई एम.

एम. ए., एम.एड., पी.एच.डी.

द. गो. शि. महाविद्यालय

अलियाबाडा, जी. जामनगर.

ISSN 2454-8596
www.vidhyayanaejournal.org
An International Multidisciplinary Research E-Journal

प्रस्तावना :-

आज से कुछ वर्ष पूर्व विद्यानों की यह धारणा थी कि, नाटक का उद्भव और विकास 19 वीं शती में हुआ, किन्तुं डॉ. दशरथ ओझाने अपने महत्वपूर्ण अनुसंधान धारा यह सिद्ध करने के च की हैं कि नाटक का उदभव 13 वीं शती में हुआ। उनके मतानुसार हिन्दी का सर्व प्रथम नाटक " गाय सुकुमार रास" है । जिसकी रचना सं. 1289 में हुई ।

डॉ ओझा नें मैथिली नाटकों, रासलीला विषयक नाटकों तथा पद्यषद्ध नाटकों की चर्चा भी की है, किन्तुं हिन्दी साहित्य में नाटकों का वास्तविक आरंभ भारतेन्दु काल से ही हुआ ।

भारतेन्दु काल :-

भारतीय नाटय शास्त्र में भारतेन्दु काल :-

भारतेन्दु काल राष्ट्रीय जागरण तथा नव सांस्कृतिक चेतनाका उन्मेष युग है। इसमें जहाँ एक और जनसामान्य में राष्ट्रीय भावना का उदभव हुआ वहाँ दूसरी और सामाजिक और धार्मिक जागरुकता आई । नवजागृति के संक्रमण काल में जनजीवन में राष्ट्रीयता और सांस्कृतिक चेतना के लिए उस युग में नाटको का माध्यम अत्यन्त उपयोगी सिध्ध हुआ ।

भारतेन्द्र के सजन व्यक्तित्वने तत्कालीन् को कलात्मक रुप से आत्मसात किया । भारतेन्दु का आधुनिक हिन्दी साहित्य में वही स्थान है जो रुसी साहित्य में पुश्तिकन का । भारतेन्दु तथा उनके समसाययिक नाटककारों की कृतियों में जनता की आशाओं तथा आकांक्षा का सर्वप्रथम हिन्दी में सजीव चित्रण हुआ

डॉ. गणणतिचन्द्र गुप्त के शब्दों में " यदि हम एक ऐसा नाटककार ढूंढे जिसने नाटक शास्त्र के गंभीर अध्ययन के आधार पर नाट्यकला पर सैधान्तिक आलोचना लिखी हो जिसने प्राचीन और नवीन, स्वदेशी और विदेशी नाटको का अध्ययन व अनुवान किया हो जिसने वैयक्तिक, सामाजिक एवं राष्ट्रीय समस्याओं को लेकर अनेक पौराणिक, ऐतिहासिक और मौलिक नाटको की रचना की हो और जिसने नाटकों की रचना ही नहीं अपितु उन्हें रंगमंच पर खेलकर भी दिखाया हो..... इन सब विशेषताओं से

सम्पन्न नाटककार हिन्दी में ही नहीं समस्त विश्व साहित्य में केवल दो चार मिलेंगे और उन सब में भारतेन्दु का स्थान उन सबसे ऊँचा होगा । "

भारतेन्दु के नाटको का परिचय :-

(१) " प्रेम जोगिनी" में भारतेन्दु ने अनेक प्रकारकी सामाजिक समस्याओं का चित्रण किया है। राधाकृष्णदास का "दुःखिनी बाला" तथा प्रतापनारायण मिश्र का " गोसंकट" ऐसे नाटक है जिनमें बाल विवाह और गोहत्या सम्बन्धी समस्याएँ है ।

(२) भारत दुर्दशा - यथार्थ बोध: -

भारत दुर्दशा में कविने अपने सामने प्रत्यक्ष दिखाई पड़नेवाले वर्तमान के लक्ष्यहीन पतन की और उन्मुख भारत का वर्णन कहना चाहते है - यदि कहा जाए तो परतंत्र भारत को कवि के लिए भारत की परतंत्रता से ज्यादा भारतीय समाज की पतनोन्मुखता सोचनीय है ।

अंग्रेजी राज्यकी स्थापना की तत्कालिन परिस्थिति की और हम ध्यान दें तो हमें हिन्दू मानसिकता की भावभूमि स्पष्ट हो जाएगी। अंग्रेजों के आने से पहले संपूर्ण उतर भारत में संल्तानी राज्य, मुगल शासन और नवाबी राज्य में हिन्दुओं का सम्मान सुरक्षित नहीं था, उनका धर्म अपनी रक्षा के लिए त्रस्त था । राज्य, संपति और शक्ति के लोभ में हिन्दु राजाओंने अपना स्वाभिमान बेच दिया था । हिन्दु स्त्रियों का गौरव भी संकटग्रस्त था। इसमें कोई शक नहीं कि अंग्रेजी राज्य ने इस संकट को दूर किया इसीलिए "भारत दुर्दशा" में संकट को दूर किया इसीलिए "भारत दुर्दशा" में कई स्थानों पर अंग्रेजी राज्यकी स्थापना की तत्कालिन परिस्थिति की और हम ध्यान दें तो हमें हिन्दू मानसिकता की भावभूमि स्पष्ट हो जाएगी। अंग्रेजों के आने से पहले संपूर्ण उतर भारत में संल्तानी राज्य, मुगल शासन और नवाबी राज्य में हिन्दुओं का सम्मान सुरक्षित नहीं था, उनका धर्म अपनी रक्षा के लिए त्रस्त था । राज्य, संपति और शक्ति के लोभ में हिन्दु राजाओंने अपना स्वाभिमान बेच दिया था । हिन्दु स्त्रियों का गौरव भी संकटग्रस्त था । इसमें कोई शक नहीं कि अंग्रेजी राज्य ने इस संकट को दूर किया इसीलिए "भारत दुर्दशा" में संकट को दूर किया इसीलिए "भारत दुर्दशा" में कई स्थानों पर अंग्रेजी राज्य को एक सकारात्मक दृष्टि से देखा गया है ।

ISSN 2454-8596
www.vidhyayanaejournal.org
An International Multidisciplinary Research E-Journal

"हे भगवती, राज राजेश्वरी इसका हाथ पकड़ो (भारत को मच्छित होते देखकर भारत भाग्य की गुहार छठ्ठा अंक) "

"अंग्रेज राज, सुख - साज सजे सब भारी

पे धन विदेश चलि जाति हुई अति ख्वारी ३

भारतेन्दु ने हिन्दु मानसिकता की ऐसी अवस्था में इस भारत दुर्दशा नाटय शासक की रचना की है। जिसमें नाटककार का कथ्य है कि भारतवासी अपने सारे व्यसनो यथा मदिरापान, जुआ, आलस्य, रोग आदि छोड़कर आगे बढ़े। छठे अंक में भारत भाग्य निराशा में डूब जाता है । वह गंगा जमुना तथा समुद्र को पुकार कर यह प्रार्थना करता है कि इस भारत भूमि को, इसके प्रसिध्ध नगरों वनों - पर्वतो को डूबो दे.....

"घोवहु यह कलंक की रासी ANA

बोरहु किन झट मथुरा कासी ।४

यदी नहीं भारत - भाग्य यह चाहता है कि प्रातः काल तक सब कुछ नष्ट हो जाए :-

"बोरहुं भारत - भूमि सबेरे

मिटे करक जिय की तब मेरे ।"

अन्ततः भारत भाग्य कटार मारकर आत्म इत्या कर लता है।

मुलतः यह मनस्थिति उस समय के प्रतिशील बुध्धिजीवियों की है । वे समाज को जागृत करके उसे प्रगति का संदेश देना चाहते है किन्तु इसके लिए पर्याप्त सामाजिक परिपक्वता का अभाव है। जनता निरक्षर, व्यसनग्रस्त और निराशाजनक हद तक चेतना विहीन है। भारत सो गया है, ज्वर ग्रस्त है- भारत भाग्य उसे जगाते जगाते थक जाता है किन्तु असफल हो जाता है। भारत दुर्दशा वस्तुतः भारतेन्दु के युग का दस्तावेज है। नाटक के सारे पात्र काल्पनिक ह परंतु सभी प्रतीक रूप में आते है जैसे निर्लज्जता, भारत दुर्देव, सत्यनाशी फौज, अंधकार, मदिरा । इसका मुख्य पात्र भारत, प्रतिनायक भारत दुर्देव तथा मदिरा प्रतिनायक की नायिका है ।

ISSN 2454-8596
www.vidhyayanaejournal.org
An International Multidisciplinary Research E-Journal

(३) अंधेर नगरी: -

लोककथा पर आधारित भारतेन्दु कृत “अंधेर नगरी" की सृजना संवत् १९३८ में हुई । इस नाटक से भारतेन्दुने नई परंपराओं, नवीन मर्यादाओ, हिन्दी नाटयकला और हिन्दी भाषा को यहाँ तक कि, "नाट्य संगीत" को भी नवीन आयाम् प्रदान किये। यह कभी "एब्सर्ड नाट्य का बोध देता है, कभी महाकाव्यात्मक नाटक के उत्कर्ष का, कभी वह एकांकी लगता है। कभी प्रहसन, कभी लोक नाटक लगता है, कभी आधुनिक नाटक लगता है। नाटक राजनैतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक अवरोधक तत्वों को तोड़ता हुआ यह नाटक अपने संक्षिप् कलवर में अपनी पाठ्यता की और उनकर्षित करता है।” भारतेन्दु के लिए साहित्य संदेश्य या और एक पूरा सामाजिक, साहित्यक, सांस्कृतिक, स्वाधीनता, भाषा, रंग- मंच आंदोलन था । भारतेन्दुने नाटक को दिल्लगी, खैल, तमाशा, क्रीडा, कोतुक, चमत्कार की संज्ञा से अभिहित किया । भारतेन्दु की " नाट्यरचना" के ये माध्यम् भी है।

अंधेरनगरी में भारतेन्दुने अपनी प्रतिभा से नई चमक, नई तलश पैदा की है। अंधेर नगरी में साहित्य है, नाट्यकला है, पर साहित्यकता का आरोपण नहीं है, रंगमच है पर स्वतः स्फूर्ति । भारतीय प्रकृति खेल खेल की रही है । यह नाटक खेल खेल में ही हो जाता है। इसे हम "रंगस्थ खेल" भी कह सकते है. नट लोगों की क्रिया । जिन्दादिली और निर्भीकता का निदर्शन है यह नाटक । परंपराओं से विलगाव की बात हम सब करते हैं पर अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और "कचीलेशिल्य” का इसके उन्कृष्ट उदाहरण हिन्दी में दुर्लभ है। जबकि तत्कालीन सभी झवलंत प्रश्नों की लड़ी भारतेन्दु के समक्ष बड़ियों की तरह थी ।

भारतेन्दु कृत अंधेर नगरी ही अकेला ऐसा नाटक है, जहाँ सारी परम्परायें आत्मसात् हो जाती है।

हो जाती है। अनायास क्लासिक, लोक परम्पराये, प्रहसन, पारसी नाट्य विधान, यथार्थवाद, एब्सर्ड, गीत-संगीत, नाट्य सब इस क्लेवर में है ।

पाँच गीत - दोहा सहित छः अंको में विभक्त अंधेर नगरी एक संपूर्ण नाटक है क्योंकि भारतेन्दु स्वयं पूर्णतः निष्णांत नाटककार है।

ISSN 2454-8596
www.vidhyayanaejournal.org
An International Multidisciplinary Research E-Journal

अंधेर नगरी में कोई नयक - नायिका, खलनायक, उत्तम अधन न्ह है। भीड़ है। वर्ग प्रतिनिधि भी है पर पात्र सामूहिकता में बदल गए है जो जनचेतना में प्रमाणिकता और सार्थकता में पहचाने जाते है, विशिष्ट वैयक्तिक गुणों में नहीं, न स्त्री और परुष पात्र के वर्ग भेद है ।

रामस्वरूप चतुर्वेदी के शब्दो में

"अंधेर नगरी को समकालीन क्लैसिक की कोटि में गिना जा सकता है । अंग्रेजी राज पर तात्कालिक रूप में और शासन सताकी प्राकृति पर शाश्वत् रूप में यह तरल शैली में लिखा गया, पर उतन ही तीखा व्यंग्य है । इसलिए बच्चों से लेकर स्थान वृध्धो तर के बीच में यह रचना लोकप्रिय है । "

शैली: -

शैली की दृष्टि से भारतेन्दु एवं उसके समकालीन लेखकों के नाटकों में बहुत कुछ संस्कृत के आटकों की परंपरा का भी पालन किया गया ।

उपसंहार:

भारतेन्दु युग के नाटकों में जन जीवन की जिस निकटता का परिचय उस में मिलता था वह प्रस्तुत युग के युग नाटकों में नहीं। इस युग के नाटककारों को एक तो परम्परागत् रंगमंच उपलब्ध नहीं हो सका और दूसरे इस बीच लगातार मध्यवर्ग की वृद्धि के कारण लोक जीवन से इनका सहज सम्बन्ध भी टूट गया । इस युग में नाटकों के अनुवादों की भरमार रही मौलिक नाटक बहुत कम लिखे गये । भारतेन्दु युग में नाटक-साहित्य का विकास जिस तीवृता से हुआ था उसमे प्रसाद के आगमन से पूर्वक तक कुछ भी उन्नति नहीं हुई।

ISSN 2454-8596
www.vidhyayanaejournal.org

An International Multidisciplinary Research E-Journal

संदर्भग्रंथ सूचि

(१) हिन्दी साहित्य: - युग और प्रवृतिर्या, नई दिल्ली- डॉ. शिवकुमार शर्मा - पृष्ठ नं. 596

(२) हिन्दी साहित्य युग और प्रवृतिर्या - डॉ. शिवकुमार शर्मा - पृष्ठ नं. 597

(३) हिन्दी नाटक और भारतेन्दु - डॉ. प्रमोदकुमार सिंह, सुधीर प्रताप सिंह अनिलकुमार सोलंकी पृष्ठ नं. 66

(४) हिन्दी नाटक और भारतेन्दे: - डॉ. प्रमोदकुमार सिंह, सुधीर प्रताप सिंह अनिलकुमार सोलंकी पृष्ठ नं. 66

(५) हिन्दी नाटक और भारतेन्दु: - डॉ. प्रमोदकुमार सिंह, सुधीर प्रताप सिंह अनिलकुमार सोलंकी पृष्ठ नं. 66

(६) हिन्दी नाटक और भारतेन्दु डॉ. प्रमोदकुमार सिंह, सुधीर प्रताप सिंह अनिलकुमार सोलंकी ६७